**Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,**
**Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com**
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, APRIL-MAY, 2021, VOL-9/45

# कोविड काल में भारतीय अर्थव्यवस्था का परिदृश्य

**अशोक कुमार वर्मा**
*(वाणिज्य प्रवक्ता), चम्पा अग्रवाल इण्टर कॉलेज, मथुरा।*
*Email Id-ashokkverma325@gmail.com*

**Paper Received On:** 25 MAY 2021
**Peer Reviewed On:** 30 MAY 2021
**Published On**: 1 JUNE 2021

***Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com***

किसी भी देश की उन्नति और विकास के लिए उस देश की जनसंख्या का शारीरिक और मानसिक रुप से स्वस्थ होना आवश्यक है। इसी लिए स्वास्थ्य को सबसे बड़ा धन माना जाता है। स्वस्थ व्यक्ति क्रियाशील रहकर अपने सभी कार्यों को प्रसन्न रहकर सही रुप से पूर्ण कर सकता है। हम समय–2 पर अनेक प्रकार की बीमारियों के शिकार होते रहते है, परन्तु कुछ बीमारियां बहुत ही घातक और अल्पसमय में जानलेवा साबित होती है। कोविड–19 महामारी इसी श्रेणी की एक घातक बीमारी है। कोरोना वायरस, वायरसों का एक बड़ा परिवार है, इनमें अनेकों की पहचान हो चुकी है, ये सूअर, चमगादड़, ऊँट और बिल्लियों आदि में पाये जाते है। कोविड–19 कोरोना वायरस परिवार का सातवॉ प्रारुप है जो जानवरों से इंसानों तक पॅहुचा है। नोवेल कोरोना वायरस, कोरोना वायरस का नया नस्ल है। चीन देश के वुहान शहर में पता लगने वाले नोवेल कोरोना वायरस से होने वाली बीमारी को कोरोना वायरस डिजीज या कोविड–19 कहते है। कोरोना वायरस के प्रमुख लक्षण–1–बुखार, 2–थकान, 3–सूखी खॉसी, 4–नाक का बन्द होना, 5–नाक का बहना, 6– गले की खराश, 7– सॉस लेने में तकलीफ आदि है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि कोविड–19 या कोरोना जैसी महामारी लोगों को अस्वस्थ बनाती है और थोड़ी सी भी लापरवाही जानलेवा साबित होती है। कोई भी व्यक्ति कोरोना मरीज के सम्पर्क में आने से इस बीमारी की चपेट में आ जाता है। इसीलिए दो गज की दूरी– मास्क है जरुरी, जैसा नारा दिया गया। किसी देश के आर्थिक विकास के लिए उस देश के मानव संसाधन का पूर्ण स्वस्थ होना एक अनिवार्य शर्त है। भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियाद कृषि क्षेत्र है। वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के पीछे मिडिल क्लास और लोअर मिडिल क्लास का सबसे अधिक योगदान है। इसीलिए भारत को एक मिडिल इनकम ग्रुप की अर्थव्यवस्था के रुप में परिभाषित किया

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language*

जाता है। कोविड–19 के वैश्विक संकट के बीच आर्थिक दृष्टिकोण से भारतीय परिदृश्य की चर्चा निम्न बिन्दुओं पर की जा सकती है–

1. भारतीय अर्थव्यवस्था को बल देने वाले किसान, असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मजदूर, दैनिक मजदूरी के लिए शहरों में पलायन करने वाले मजदूर, सड़कों के किनारे रेहड़ी, ठेला या जमीन पर बैठकर दुकान लगाकर आजीविका चलाने वाले लोग, जिन्हें हैण्ड टू माउथ कहा जा सकता है।
2. भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास हेतु उत्पादन करने वाला वह क्षेत्र जो इस देश में पूँजी और गैर पूँजी वस्तुओं का उत्पादन करता है अर्थात मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर या विजनेस सेक्टर।

कोविड काल में लम्बी अवधि के लिए देश में लॉकडाउन लगाना पड़ा, जिसका अर्थव्यवस्था पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा। दुनियाभर की सरकारों ने अपने देश की आर्थिक मंदी से निपटने और उत्पादन क्षेत्र को संजीवनी देने के लिए बड़े राहत पैकेज का ऐलान किया, क्योंकि आर्थिक विकास का पहिया एकदम थम सा गया था। इसीक्रम में हमारी सरकार को भी गरीबों की मदद के लिए बड़े पैकेज का ऐलान करना पड़ा। पूरी तरह से कमजोर और असंगठित क्षेत्र के लोगों की समस्याओं के निवारण के लिए कोरोना वायरस से आये आर्थिक संकट से जूझ रहे लोगों के लिए सरकार ने पैकेज जारी किया है। जल्द ही मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर के लिए भी किसी बड़े पैकेज के एलान की सम्भावना है। कोविड–19 का संकट ऐसा कुछ संकेत दे रहा है कि छोटी सेलरी पर काम करने वाला मिडिल क्लास इस संकट में और अधिक आर्थिक रुप से कमजोर हो जाय, इस प्रकार उसकी गणना लोअर मिडिल क्लास या उससे भीनिम्न श्रेणी में की जाय।

पिछले दो वर्षों से आर्थिक सुस्ती चल ही रही थी, इसी बीच कोविड–19 ने आकर भारतीय अर्थव्यवस्था की सुस्ती को और बढ़ा दिया। इस प्रकार देश में मॉग आधारित आर्थिक सुस्ती आ चुकी थी और अब इसने मॉग के साथ–साथ आपूर्ति आधारित सुस्ती का रुप धारण कर लिया है। वर्तमान की बात करें तो भारतीय अर्थव्यवस्था एक गहरे संकट की तरफ बढ़ रही है। प्रतिष्ठित अन्तर्राष्टीय संस्थाओं ने भीतर की आर्थिक वृद्धि दर के सन्दर्भ में जो ऑकलन जारी किये है, वे चिन्ताजनक हैं। **सेन्टर फॉर मॉनिटरिंग इन्डियन इकोनॉमी द्वारा जारी ऑकड़ों के अनुसार भारत में लॉकडाउन की वजह से कुल 12 करोड़ नौकरियां चली गई है।** कोरोना संकट से पहले भारत में कुल रोजगार आबादी की संख्या 40.4 करोड़ थी जो इस संकट के बाद घटकर 28.5 करोड़ हो चुकी है। हमें जान और जहान दोनों बचाना है। यदि जान बचाने के लिए लॉकडाउन करना है तो जहान बचाने के लिए लोगों की जीविका के साधनों को पुनः स्थापित करना है। अतः आर्थिक मोर्चे पर कुछ बड़े फैसले लेने होंगे। हेल्थ इमरजैंसीऔर इकोनॉमिक इमरजैंसी में तालमेल बैठाना होगा । भारतीय अर्थव्यवस्था में रिवर्स माइग्रेशन भी दिख रहा है। लोग शहरों से वापस गॉव की तरफ लौट रहे है। आने वाले समय में कोरोना वायरस

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language*

की समस्या भारत में कितनी गंभीर होती है और उस पर कबतक पूर्णतः काबू पाया जा सकता है? इसका असर भी भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। कोरोना के कारण भारत की आर्थिक वृद्धि दर में गिरावट आयेगी, कोरोना ने भारत ही नही बल्कि दुनिया की अर्थव्यवस्था को खराब कर रखा है। वर्ल्ड बैंक के अनुमान के मुताबिक वित्तीय वर्ष 2019–20 में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर घटकर मात्र 5 प्रतिशत रह जायेगी, तो वहीं वर्ष 2020–21 में तुलनात्मक आधार पर अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में भारी गिरावट आयेगी, जो घटकर मात्र 2.8 प्रतिशत रह जायगी।

लॉकडाउन के कारण, फैक्टी, ऑफिस, मॉल्स, व्यवसाय आदि बन्द हो जाते है, घरेलू मॉग और आपूर्ति प्रभावित होने के कारण आर्थिक वृद्धि दर प्रभावित होती है। अतः जोखिम बढ़ने से घरेलू निवेश के सुधार में देरी होती है जिसके कारण अर्थव्यवस्था मुश्किल दौर में पहुॅच जाती है। इंटरनेशनल लेबर आर्गनाइजेशन ने कहा था कि कोरोना वायरस सिर्फ वैश्विक स्वास्थ्य संकट नही रहा बल्कि ये एक बड़ा लेबर मार्केट और आर्थिक संकट भी बन गया है जो लोगों को बड़े पैमाने पर प्रभावित करेगा। विश्व बैंक ने भी आगाह किया है कि इस महामारी की वजह से भारत ही नही बल्कि समूचा दक्षिण एशिया गरीबी उन्मूलन से मिले फायदे को गॅवा सकता है। अतः भारत को भी कोविड महामारी को फैलने से रोकने के लिए जल्द से जल्द प्रभावी कदम उठाना होगा, इसके साथ स्थानीय स्तर पर अस्थायी रोजगार सृजन कार्यक्रमों पर भी ध्यान देना होगा। सरकार द्वारा कोविड–19 के प्रसार को रोकने के लिए लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग जैसे प्रयासों से औद्योगिक उत्पादन प्रभावित हुआ है। लॉकडाउन के कारण बेरोजगारी बढ़ी है, जिससे सार्वजानिक क्षेत्र में भारी कटौती हुई है, कच्चे माल की उपलब्धता, उत्पादन और तैयार उत्पादों के वितरण की श्रंखला प्रभावित हुई है, जिसे पुनः शुरु करने में लम्बा समय लग सकता है। उत्पादन स्थगित होने के कारण मजदूरों का पलायन बढ़ा है, इस दशा में पुनः कुशल मजदूरों की नियुक्ति करके पूरी क्षमता के साथ उत्पादन शुरु करना एक बड़ी चुनौती है। इसका अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। खनन और उत्पादन जैसे अन्य क्षेत्रों में गिरावट का प्रभाव सेवा क्षेत्र की कम्पनियों पर भी पड़ा है। एविएशन सेक्टर में वेतन कम करने की खबर है, रेस्टोरेंट बन्द होने से लोग घूमने नहीं निकल रहे है। सामान की खरीदारी भी नहीं हो रही है। कम्पनियों को किराया, वेतन तथा अन्य खर्चों का भुगतान करना पड़ रहा है। घाटा झेल रही कम्पनियॉ अधिक समय तक यह भार सहन नही कर सकती। लॉकडाउन का सबसे अधिक असर अनौपचारिक क्षेत्र पर पड़ा है, अर्थव्यवस्था का 50 प्रतिशत जीडीपी अनौपचारिक क्षेत्र से ही आता है। यह क्षेत्र लॉकडाउन के दौरान काम नही कर सकता, और न कच्चा माल खरीद सकते न बनाया हुआ माल बाजार में बेच सकते, अतः उनकी कमाई बन्द हो जायेगी। अनौपचारिक क्षेत्र में फेरीवाले, विक्रेता, कलाकार, लघुउद्योग और सीमापार व्यापार शामिल है। लॉकडाउन के दौर में सबसे ज्यादा असर एविएशन, पर्यटन, होटल आदि

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language*

क्षेत्रों पर पड़ा है। कोरोना के कारण भारत सरकार द्वारा विदेशी निवेश के जरिये अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की जो कोशिश थी, उसे भी धक्का लगेगा।

रिजर्व बैंक ने सभी बैंकों से सभी कर्जों पर तीन माह तक कर्जों का भुगतान (किस्तों को) टालने को कहा है। साथ ही ब्याज दरों में कमी की है। हमारे देश में छोटे–छोटे कारखानों और लघु उद्योगों की संख्या बहुत ज्यादा है। कोरोना से उनकी कमाई रुक जायेगी, आर्थिक तंगी में आकर कई लोग महाजनों से ऊँचे ब्याज दर पर कर्ज ले लेते है और कर्जजाल में फॅस जाते है। ऑटोमाबाइल सेक्टर, रियल स्टेट, लघुउद्योग आदि असंगठित क्षेत्रों में सुस्ती छायी है।

बैंक एन.पी.ए. की समस्या से निपट रहे है। सरकार ने निवेश के जरिए नियमों में राहत और आर्थिक मदद देकर अर्थव्यवस्था को राहत देने की कोशिश की। परन्तु कोरोना के कारण लोग घरों में है, कारखानों और दुकानों पर ताले लगे है। इस तरह से कोविड काल ने देश की अर्थव्यवस्था की जड़ों को खोखला किया है। अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्था आई.एम.एफ ने एक टास्क फोर्स का गठन किया है। इस टास्क फोर्स का उद्देश्य है कि बिगड़ती हुई अर्थव्यवस्था को कैसे पटरी पर लाया जाय? इस टास्क फोर्स में आर.बी.आई. के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन भी है। इसी तरह भारत को भी चाहिए कि प्रतिभाशाली अर्थशास्त्रियों की एक कमेटी का गठन किया जाय, जिसमें प्रोफेशनल हो और वे भारतीय चुनौतियों के अनुसार देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए चरणबद्ध तरीके से नीतिगत समाधान सरकार के सामने रखें। यद्यपि कोविड–19 के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था का परिदृश्य अच्छा नही दिख रहा है, पर वह दिन दूर नही जब हम कर्मठ भारतीय श्रम और संघर्ष से अर्थव्यवस्था को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सक्षम होंगे।

सन्दर्भ

*कोरोना संकट के बीच क्या है भारतीय अर्थव्यवस्था की चुनौतियां*

*ET Contributors – 20 April-2020*

*कोराना वायरस के कारण भारत में पैदा हुई आर्थिक चुनौतियां*

*orfanline. Org 26 August-2020*

*कोविड–19 के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था–नये समय में नई उम्मीदें*

*orfanline. Org 26 April-2020*

*कोरोना वायरस– लॉकडाउन से टूटेगी अर्थव्यवस्था की कमर*

*BBC.Com 25 March-2020*

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language*